Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 5, Nov. 2012
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

नारी शिक्षा एवं सशक्तिकरण

सुनील धावने ,लखन सिंह परमार

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान, डॉ. आम्बेडकर नगर (महू)
सहायक प्राध्यापक प.म.बं.गुजराती कला एवं विधी महाविद्यालय, इन्दौर

सारांश :

आज हमारा देश 21 वी सदी में प्रवेश कर रहा है और आज का युग तकनीकी एवं वैश्वीकरण का युग माना जाता है। इस युग में शिक्षा का बहुत अधिक महत्व है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी भी समान मानी गई है। कहा जाता है, कि यदि एक पुरूष को शिक्षित किया जाये तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है और यदि एक महिला को शिक्षित किया जाये तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। अभिप्राय यह है कि एक महिला के शिक्षित होने से पूरे परिवार का कल्याण जुडा होता है। हमारा देश विकासशील देशों की श्रेणी में अग्रणी होने के बावजूद देश में गरीबी और अशिक्षा एक गम्भीर समस्या है। ऐसी स्थिति में स्त्रियों की शिक्षा का महत्व और बढ़ जाता है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां आज भी महिलायें में जागरूकता नही है, पुरानी परम्परागत रूढ़ियों में जकड़ी है।

प्रस्तावना :

हमारे संविधान में स्त्री और पुरूषों दोनों को समानता का अधिकार प्राप्त है कोई भी व्यक्ति चाहे जिस जाति, वर्ग लिंग सम्प्रदाय का हो उसे शिक्षा पाने का अधिकार है। फिर स्त्रियां इसमें क्यों वंचित रहे। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही सशक्तिकरण होगा।

आजादी के पश्चात हमारे नेताओं ने शिक्षा के संबंध में जो सपने देखे थे वह अभी भी सपने बने हुए है उन्हें किसीने जमीन पर उतारने की कोशिश नही की। किसी भी देश या समाज की प्रगति में वहां की स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वही राष्ट्र वही समाज उन्नति कर रहा है जिस समाज की महिलाये शिक्षित और सशक्त हो चुकी है। अतः महिला विकास और कल्याण हमारे समाज का महत्वपूर्ण दायित्व डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर ने विधि मंत्री के रूप में कार्य करते हुए स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए एवं उनके नैतिक अधिकारों को दिलाने के लिए हिन्दु कोड़ बिल में परिवर्तन करवाया। बाबासाहेब को यह बात शूल की तरह चुभती थी कि जहां विश्वभर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शुद्रो औंर महिलाओं का समान माना गया है वही हिन्दू समाज में महिलाओं को प्रायः सभी प्रकार के अधिकारों विवाह, सम्पत्ति, सामाजिक कर्तव्य के साथ–साथ शिक्षा से भी अलग रखा गया। जिसमें स्त्री को मनुष्य के सुख और साधन के उपभोग मात्र माना गया। भारतीय समाज में व्याप्त इन्ही विसंगतियों को दूर करने के लिए बाबासाहेब ने सिंहनाद किया और में केवल दलित महिलाओं के लिए वरन सम्पूर्ण भारतीय महिलाओं के समस्त सर्वांगीण विकास के द्वारा खोल दिये। नेहरू जी ने बाबासाहेब के विषय में कहा था कि मै सोचता हूँ कि डॉ. आम्बेडकर को हिन्दू समाज की अन्यायपूर्ण विषमताओं के प्रति विद्रोह करने वाले के रूप में याद किया जायेगा। मुख्य बात यह है कि उन्होंने ऐसी स्थिति में विरूद्ध विरोध किया जिसके प्रति हमें करना चाहिए। और वास्तव में हमने किसी न किसी रूप में याद भी किया है।

यदि हम राष्ट्र एवं समाज का विकास चाहते है, तो इस बात पर गौर करना होगा कि महिला शिक्षा समाज का दायित्व है। इस सन्दर्भ में पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि एक बालक में भी शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है किन्तु एक बालिका की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है। डॉ. आम्बेडकर ने महिला शिक्षा पर भी अधिक बल दिया और कहा कि हमारे सामाजिक संरचना में महिलाओं की स्थिति शुद्रों से भी बदतर है, क्योंकि उनके साथ हर वर्ग अत्याचार करता है। अगर इनकी स्थिति सुधारना है तो गुलामी से मुक्त कर उन्हें शिक्षित करना होगा। बाबासाहेब ने भारतीय नारी में आत्म सम्मान आत्म निर्भरता और आत्म विश्वास का संचार कर उनके ''अत्त दीपो भव'' और ''शिक्षित बनों, संगठित रहो, संघर्ष करों'' के सूत्र वाक्यों द्वारा आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके द्वारा नारी शिक्षित बन कर सशक्तिकरण का परिचय दिया।

''नारी ब्रम्हा है, विद्या श्रृद्धा, शक्ति और पवित्रता है, वह सब कुछ है जो संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दिखाई देती है। नारी कामधेनु है अन्नपूर्णा सिद्धी है। वेदों में नारी को गौरवमय स्थान प्राप्त है और नारी को ही घर कहा गया है। नारी का अलग–अलग सीमा में रहकर समाज को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने की जिम्मेदारी से भी स्वयं का अलंकृत किया है, परन्तु क्या नारी को वह दर्जा रहे है जो वेदो व पुराणों में बताया गया है। नारी शक्ति का आदर्शात्मक स्वरूप है पर हम सब नारी शक्ति के सामाजिक स्वरूप का व्यावहारिक चिन्तन करते है, जब हम शक्ति संरचना में देखते है कि एक वर्ग अपना प्रभुत्व दूसरे वर्ग पर अपना अधिपत्य के यप में स्थापित करना है, जिसमें शारीरिक बल का प्रयोग भी करना है।

वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी थी, इतनी अच्छी थी कि वे पुरूषो में समकक्ष थी। इस काल में महिलाओं की शिक्षा दीक्षा की सुन्दर व्यवस्था भी और वे सामाजिक कार्यो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

धर्मशास्त्र काल – सामाजिक एवं धार्मिक सकीर्णता का काल था, इस काल में महिलायें परतंत्र निःसहाय और निर्बल माने जाने लगी उनके लिए विवाह का ही एक मात्र संस्कार माना गया।

उत्तर वैदिक काल में शिक्षा की अवधि साधारणतः 1400 ई.पू. से 600 ई.पू. तक मानी जाती है। उत्तर वैदिक काल में विस्तार का भी

समय ऋग्वेदिक काल के अन्त एवं बौद्ध तथा जैन धर्मग्रन्थों के बीच माना गया। इस युग में नारी को शनैःशनै उनके अधिकरों से वंचित रखा जाने लगगा। 1500 ई.पू. से स्त्रियों को यज्ञों से बाहर निकालने की प्रवृत्ति से स्त्रियों की स्थिति में अतः पतन का प्रारम्भ हुआ और उन्हें शुद्रों के समकक्ष माने जाने लगा और यहां से ब्राम्हणवाद शुरू हुआ, जिसमें नारी शिक्षा का पतन आरम्भ हो गया।

मध्यकाल सोलहवी शताब्दी से लेकर 18 वी शताब्दी का समय मध्यकाल में रखा गया है, इस काल में स्त्रियों की स्थिति में जिसका पतन हुआ उतना कही नही हुआ। उनको अनेकों कुप्रथाओं और अशिक्षा ने जकड़ लिया इसी युग में महिलाओं का और भी पतन हुआ। समाज में व्यापक दृष्टिकोणों के कारण मुसलमान की दृष्टि में महिलाओं को दूर रखने का प्रयास किया गया, जिससे पर्दा प्रथा एवं घुंघट प्रथा प्रारम्भ हुई, इससे नारी की उन्नति का मार्ग और बन्द हो गया।

भगवान बुद्ध में महिलाओं को प्रवृक्ता लेने का अधिकार देकर उन पर होने वाले अन्याय, अत्याचार को दूर करने के लिए इस समय मार्ग बताया। उन्होंने पुरूषों के समान स्त्रियों को शिक्षा देने पर बल दिया एवं स्त्रियों को उनका तेज सुप्तावस्था में था उसकी पहचान करने भी समता भगवान बुद्ध ने प्रदान की।

ब्रिटिश काल – 18 वी सदी के अन्तिम वर्षो में स्वतंत्रता प्राप्ति समय भारतीयों द्वारा समाज सुधार के अनेक प्रयास किये गये लेकिन सरकार की ओर से स्त्रियों के सुधार के लिए कोई व्यावहारिक प्रयास नही किये गये। सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने स्वतंत्र रूप से अपने अधिकारों की मांग करने और व्यवहार में नियमों में परिवर्तन करने का अधिकार नही था। स्त्रियों में अज्ञानता इस सीमा तक बढ़ी की स्वतंत्रता के पूर्व स्त्रियों की साक्षरता का प्रतिशत 6 प्रतिशत से भी कम था। इस काल में स्त्रियों की निर्योग्यता में कोई विशेष परिवर्तन नही आया। कम संख्या अंग्रेजों ने भारतीयों के जीवन में धर्मिक सामाजिक गतिविधियों में किसी प्रकार के हस्तक्षेप नही करने की नीति अपनाई। जिसका कारण महिलाओं की स्थिति को सुधारने की दृष्टि से कोई प्रयास नही किये गये। जिससे सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में महिलाओं की निर्योग्यता बरकरार रही।

स्त्रियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मुगलकाल, सल्तनत काल पर दृष्टि डाले तो हम देखेंगे कि रजिया सुल्तान में देश की बागडोर सम्भाली नूरजहां ने अपने असीम सौन्दर्य में बादशाह जहांगीर को मोहित किया और शासन चलाया वही मुमताज महल ने अपने प्रेम की अनुपक सौगात ताजमहल का शाहजाहां ने निर्माण करवाया। माता कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वांछित वर मांग कर श्रीराम का चौदह वर्ष के लिए वनवास भिजवाया। नारी की महत्ता हर युग और काल में रही है। व्यक्ति इस की अन्यन्य साधिका मीराबाई ने अपनी अलग पहचान बनाई, भक्त और भगवान की साकार ज्योति जलाई। माता जीजाबाई ने अपनी तत्कालीन परिस्थितियों से जुझकर अपने विवेक कौशल से छत्रपति शिवाजी महाराज को महान बनाया। शौर्यमयी और तेजस्विनी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति का जमकर विरोध किया और जंत्र करते हुए आजादी की खातिर अपनी कुर्बानी दी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 हजरत महल में क्रांतिकारी बाना पहनकर युद्ध में भाग लिया बनी प्रकार नागालैंड़ की रानी गदनलियों ने भी आजादी की जंगलों में अपना योगदान दिया। महाराजा दुष्यंत की रानी शकुंतला ने विकट परिस्थितियों से जूझते हुए बालक भरत का ऐसा सर्वांगीण विकास किया कि वह बड़ा होकर सम्राट भरत बना और उनके नाम पर हमारे देश का नाम ''भारत'' पड़ा। चितौड की महारानी अनुपम सौन्दर्य की एकल स्वामिनी पद्मिनी ने जौहर से इहलीला समाप्त कर वीरांगना की भूमिका निभाई किन्तु आलउद्दीन खिलजी के घृणित सपनों का साकार नही होने दिया। उर्वशी, मेनका जैसी अप्सराओं ने चारू लावण्य पाकर ऋषि देवगणों को मोहित किया। कही साहवी बनकर ज्ञानगंगा प्रवाहित की तो कही साधक भक्त बनकर भगवान को प्रसन्न किया तो कही सत्यम शिवम् सुन्दरम की समरता त्रिवेणी साबित हुई और सतीत्व व मर्यादा का प्रमाण कर लीसामाना की तरह अधिक परीक्षा दी और अपना पतिव्रत धर्म निभाया एवं संस्कृति को समृद्ध बनया हर क्षेत्र में श्रेष्ठता का परचम लहराकर जीवन के प्रत्येक पायदान पर अपना वर्चस्व बनाया

स्वतंत्रता के पश्चात स्त्रियों की स्थिति

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्रियों की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति में जो परिवर्तन हुआ सम्पूर्ण विश्व भी उनकी कल्पना नही कर सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में स्त्रियां इतनी तेजी से बढ़ रही है स्वतंत्रता से पूर्व स्त्रियों के लिये न तो शिक्षा सम्बन्धी समुचित सुविधाये थी और न ही स्त्री शिक्षा को माता पिता उचित समझते थे। परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्त्री शिक्षा की व्यापक प्रगति हुई। यही स्त्री शिक्षा को प्रगति को देखते हुए श्री फडणिकर ने कहा कि – ''स्त्री शिक्षा के विद्रोह की उस कुल्हाड़ी की धार तेज कर दी है, जिससे हिन्दू सामाजिक जीवन की जंगली झाडियों को साफ करना सम्भव हो गया है।'' स्त्रियों को आर्थिक स्वंत्रता मिल जाने के कारण उनके आत्म विश्वास कार्यक्षमता और मानसिक स्तर में इतनी प्रगति हुई कि उनके व्यक्तित्व की तुलना उस स्त्री से किसी प्रकार नही की जा सकती जो आज से कुछ वर्ष पूर्व तक संसार की सम्पूर्ण लज्जा को अपने घूंघट में समेटे हुए और पुरूषों का शोषण को सहन करती हुई घूंघट में अपना जीवन व्यतीत करने का बाध्य थी।

महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति

लैंकिग विषमताओं को प्रोत्साहित करने वाली परम्परागत संस्थाओं व संरचनाओं में होने वाले ऐसा परिवर्तन जिससे कि महिलाओं की समानता सुनिश्चित हो सके, महिला सशक्तिकरण का आधार माना गया है। महिला सशक्तिकरण के मानक इस प्रकार है।

1.महिलाओं की सकारात्मक छवि का निर्माण ।
2.महिलाओं में आत्म सम्मान व आत्मविश्वास की भावना विकसित करना।
3.महिलाओं में आलोचनात्मक चिन्तन की समता को विकास करना।
4.निर्णय लेने की क्षमता व उसका पोषण करना।
5.विकास प्रक्रिया के समान भागीदारी सुनिश्चित करना।
6.आर्थिक स्वतंत्रता हेतु सूचना ज्ञान व कुशलता उपलब्ध कराना।
7.महिलाओं को कानूनी ज्ञान का विकास तथा स्वयं के अधिकारों संबंधी सूचनाओं तथा उनकी पहुंच को सुनिश्चित करना।
8.सामाजिक आर्थिक जीवन में सभी क्षेत्रों में समान रूप से उनकी सहभागीता में वृद्धि हेतु प्रयास करना।

यद्यपि लैंगिक समानता विकास व महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में शिक्षा निश्चित व महत्वपूर्ण भूमिका मानी गई है।
सन् 2001 की जनगणना अनुसार महिलाओं की कुल जनसंख्या की लगभग 48.2 प्रतिशत है और इनकी साक्षरता दर 54.16 प्रतिशत है। लगभग

आधी आबादी होने के बावजूद महिलाओं की निर्णायक संस्थाओं में भागीदारी 10 प्रतिशत से अधिक नही है। वर्तमान संसद में मात्र 7.9 प्रतिशत केन्द्रीय मंत्री पद पर 10.5 प्रतिशत, प्रशासनिक सेवा में 6.8 प्रतिशत, पुलिस बल में 2.2 प्रतिशत तथा अन्य पदों पर 5.6 प्रतिशत महिलायें कार्यरत है। उच्चतम न्यायालय में मात्र एक महिला न्यायाधीश है।

महिलाओं की स्थिति में बदलाव की दृष्टि से सरकार ने वर्ष 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित कर उसे मजबूती देने के प्रयास किये।

महिला सशक्तिकरण अभियान के अन्तर्गत केन्द्र सरकार ने विभिन्न योजना और को मूर्तरूप दिया। 1982 में डवाकरा योजना प्रारम्भ की जिसमें ग्रामीण महिलाओं को रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषाहार, शिशुओं की देखभाल, 1989 में महिला समाख्य योजना, 1992 में मात् एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम एवं किशोरी बालिका योजना, 1993 में महिला समृद्धि योजना एवं राष्ट्रीय महिला कोष, 1994 में राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना, 1995 में इन्दिरा महिला योजना आरम्भ की, 1996 में ग्रामीण महिला विकास परियोजना, 1997 में राज राजेश्वरी बीमा योजना एवं स्वास्थ्य सखी योजना एवं बालिका समृद्धि योजना प्रारम्भ की गई। इसी प्रकार महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु सरकारी नौकरियों और पंचायती राज व्यवस्था में 30 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की, सरकारी नौकरीयों में आयु सीमा की छूट दी गई।

महिला शिक्षा

जब महिला शिक्षा के विषय में चर्चा करते है तो स्वतः डॉ. आम्बेडकर के महिला शिक्षा के लिये किये प्रयास हमारे सामने आते है।

गांधीजी ने स्त्री शिक्षा के महत्व को स्वीकारा उन्होंने महसूस किया कि स्त्रियों में अद्भूत नैतिक दृढता और सहनशीलता है। उनकी यही विशेषता उन्हें पुरूषों से भी उच्च स्थान प्रदान करती है। उन्होंने इसे स्त्री शक्ति कहा और अनुभव किया कि यदी शक्ति भारत को गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने के लिए जा रहे शांति पूर्ण सत्याग्रह आंदोलन की मजबूती प्रदान करेगी और हुआ भी वही।

महिलाओं की वर्तमान शैक्षणिक स्थिति

नियोजित विकास प्रक्रिया प्रारम्भ होने के साथ महिलाओं की शिक्षा का आवश्यक माना गया, जिसके परिणाम स्वरूप पिछले दशक (1991–2001) में महिला साक्षरता की दर में 15 प्रतिशत की वृद्धि होना उत्साहजनक माना जा सकता है। 1991 की 30 प्रतिशत की तुलना में 2001 में महिला साक्षरता दर का 54 प्रतिशत दर होना उल्लेखनीय सुधार माना जा सकता है।

राज्य	वर्ष 2001	श्रेणीक्रम	वर्ष 1991	श्रेणीक्रम
बिहार	33.57	1	21.99	2
झारखण्ड	33.98	2	25.52	4
जम्मू और कश्मीर	41.82	3		
उत्तरप्रदेश	42.98	4	24.37	3
अरूणाचल प्रदेश	44.24	5	29.69	7
राजस्थान	44.34	6	20.44	1
मध्यप्रदेश	50.28	7	29.35	6
उड़ीसा	50.97	8	34.68	9
आंध्रप्रदेश	51.17	9	37.72	8
छत्तीसगढ़	42.40	10	27.52	5
आसाम	56.03	11	43.03	12
हरियाणा	56.31	12	40.47	10
कर्नाटक	57.45	13	44.34	13
गुजरात	58.60	14	48.64	18
मणिपुर	59.70	15	47.60	17
पश्चिम बंगाल	40.22	16	46.56	15
उत्तरांचल	60.26	17	41.63	11
मेघालय	40.41	18	44.85	14
सिक्किम	61.46	19	46.76	16
नागालैंड	61.92	20	54.75	24
पंजाब	63.55	21	50.41	20
तमिलनाडु	64.55	22	51.33	21
त्रिपुरा	65.41	23	49.65	19
महाराष्ट्र	67.51	24	52.32	22
हिमाचल प्रदेश	68.08	25	52.13	22
गोवा	75.51	26	67.60	25
मिजोरम	86.13	27	78.60	26
केरल	87.86	28	86.17	27
भारत	54.16			

स्त्रोत : जनगणना रिपोर्ट (भारत) 1991 एवं 2001

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के शिक्षा विभाग ने विश्वविद्यालय शिक्षा के प्रति 100 लडकों में लड़कियों की संख्या संबंधी आंकडे प्रस्तुत किये है, जिसमें 1950–51 में प्रति 100 लडकों में कला संकाय में 15.4 प्रतिशत, चिकित्सा में 18.5 प्रतिशत साइंस में 0.0 प्रतिशत कॉमर्स 0.5 प्रतिशत व इंजीनियरिंग में 0.3 प्रतिशत थी। परंतु 1998–1999 के अनुसार इन सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। प्रति 100 लडकों में कला 18.1 प्रतिशत, चिकित्सा 62.1 प्रतिशत साईस 55.2 प्रतिशत, कॉमर्स 46.1 प्रतिशत तथा तकनीकी शिक्षा 24.3 प्रतिशत के क्षेत्र में लडकियों की स्थिति को पर्याप्त माना गया। यद्यपि सभी शैक्षणिक स्तरों पर लैंगिक असमानता आज भी विद्यमान है परंतु स्त्रियों को स्वयं की साक्षरता दर व शैक्षणिक स्तर में हुई प्रगति को उत्साहजनक माना जा सकता है। इन सभी शैक्षणिक उपलब्धियों ने निश्चय ही एक वर्ग के रूप में महिला का सशक्त कर महिला सशक्तिकरण की अविस्मरणीय उदाहरन प्रस्तुत किया है।

चुनौती

आज के इस दौर में भी महिलाओं के विरूद्ध घरेलू हिंसा, समाज में अपमानित होना, उनके विरूद्ध हिंसा आम बात है पति द्वारा मारपीट करना, बलात्कार शारीरिक शोषण छेड़छाड, भगा ले जाना, गाली गलौज, उत्पीड़न जैसी घटनायें बड़ी चुनौती के सामने विराजित है,जिससे नारी समाज का एक पिछड़ा वर्ग डरा हुआ है, ऐसे में वह विकास के बारे में कम और अपनी अस्मिता की रक्षा के बारे में ज्यादा सोचती है, जिससे सशक्तिकरण के प्रयासों के बावजूद बाधाओं को सामना करना पड़ता है। यह स्थिति शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को अधिक मिलती है। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलायें इस विकास के दौर में भी पिछड़ी है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि महिलाये 21 वी सदी में प्रवेश कर चुकी है और प्रत्येक क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य कर उपलब्धि अर्जित कर पुरूषों के अभेद किलों को भेद रही है। जो निरंतर सदीयों से होता चला आ रहा है। बहुत सारे देश महिलाओं की राष्ट्र प्रमुख के रूप में स्वीकार कर चुके है। श्रीलंका में श्रीमती भण्डारनायके और चन्द्रिका कुमारतुंगा, लाइबेरिया की राष्ट्रपति एलनजानजन सरलीक किसी अफ्रीका देश की राष्ट्रपति चुनी जाने वाली महिला भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल, प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, श्रीमती बेनजीर भुट्टों के अतिरिक्त राजनैतिक क्षेत्र में शेख हसीना खालिदा जिया, तथा इण्डोनेशिया में सुकोर्णो की पुत्री मेघावती ने महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित कर दिया। इसके अतिरिक्त सोनिया गांधी, ममता बेनर्जी, सुषमा स्वराज, गिरिजा व्यास, राबड़ी देवी, नजमा हेपतुल्ला आदि प्रमुख महिलायें जो राजनैतिक क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में कल्पना चावला, मेघा पाटकर, इन्दिरा लुई, सानिया मिर्जा, मनमी प्रसाद, किरण प्रसाद, मन्नु भण्डारी, किरण बेदी, स्वर कोकिला लता मंगेशकर, अभिनेत्री शबना आजमी, ऐश्वर्या राय, धाविका पी.टी.उषा, एथलीट में कल्लेश्वरी, पर्वतारोही बच्छेन्द्रीपाल, साहसी उमा भारती, पत्रकार मृणाल पाण्डे के अतिरिक्त विश्व सुन्दरी रीता फारिया, प्रियंका चोपडा, लारा दत्ता ने देश को सम्मान दिया। ये महिलायें विज्ञान समाज सुधार, उद्योग, व्यवसाय, खेल, साहित्य, लेखन और प्रशासन के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है।

आज महिलाओं ने सिद्ध कर दिया कि महिलायें केवल घर पर ही नही बल्कि देश की बागडोर भी सम्भाल रखी है। इन्होनें सिद्ध कर दिया कि महिलायें किसी भी क्षेत्र में पीछे नही इसका मुख्य कारण नारी शिक्षा एवं सशक्तिकरण है, जो बाबासाहेब आम्बेडकर द्वारा नारी शिक्षा एवं सशक्तिकरण के लिये किये प्रयासों का ही उदाहरण है।

संदर्भ

1.धावन, हरिमोहन, महिला सशक्तिकरण विविध आयामा
2.जनगणन रिपोर्ट 2001 भारत सरकार नई दिल्ली
3.पांडे आरती चातुवर्ण्य से जुझती महिलाये नई दुनिया, इन्दौर पृ. 8, 8 मार्च 2007
4.डॉ. आम्बेडकर सामाजिक शोध पत्रिका अंक वर्ष बाबासाहेब आम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान महू
5.डॉ. श्रीमति राजेश जैन भारत में राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति एवं महिला सशक्तिकरण, महिला विधी भारती, विधि भारती परिषद, अंक 33, पृष्ठ 73 दिल्ली

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net